शबद

भाग – २

पिछले लेख में बताया जा चुका है, कि **'तत्त शबद'** निरंकार से उत्पन्न हुआ तथा इसमें प्रभु के समस्त आत्मिक गुण विद्यमान हैं। इस **'तत्त शबद'** से सूक्ष्म तथा स्थूल संसार उत्पन्न होता, पनपता तथा इसी में विलीन हो जाता है।

उतपति परलउ सबदे होवै ॥
सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ (पृ. ११७)

एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु ते उतपति चलै ॥ (पृ. १३३४)

दूसरे शबदों में **'तत्त शबद' के दो मुख्य स्वरूप हैं** —

१. सूक्ष्म **'दैवीय स्वरूप'** — सभी दैवीय गुण तथा उमंगे, जैसे —

प्यार
श्रद्धा
दया
विस्माद
भय-भावना
आत्मिक शक्ति

आदि, सभी इस स्वरूप में विद्यमान हैं।

२. **स्थूल रूप या 'प्रकृति'** — दृष्यमान अथवा 'मन, बुद्धि तथा पांच ज्ञान इन्द्रियों द्वारा प्रतीत होने वाला **संसार'**।

१. **'दैवीय' स्वरूप** —

रूप
रंग
आकार
वेष
चक्र
चिन्ह

मन
चित्त
बुद्धि
सुगन्धि
अक्षर
ध्वनि
देश
काल, आदि

से परे है तथा इस में निरंकार के समस्त सूक्ष्म गुण मौजूद हैं। परन्तु, यह **'सूक्ष्म तत्त शबद'** बरव्शे हुए गुरमुरव प्यारों को **शबद -सुरति का अभ्यास करने से गुरप्रसादि द्वारा, अनुभव में ही प्रकाशमान होता है ।**

२. **स्थूल रूप** — रूप, रंग, आकार, चक्र, चिन्ह, मन, चित्त, बुद्धि, सुगंधि, अक्षर, बोली, देश, काल की **पकड़ में है** तथा पाँचों ज्ञान इन्द्रियों का विषय है। सारी प्रकृति जैसे सूर्य, तारे, हवा, पानी, अग्नि, जीव, जन्तु, नदियां, नाले, पहाड़, वनस्पति आदि सब इसी स्वरूप के प्रकटाव हैं।

सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ।। (पृ. ४६४)

बलिहारी कुदरति वसिआ ।।
तेरा अंतु न जाई लरिवआ ।। (पृ. ४६९)

उपरोक्त गुरबाणी के प्रमाणो अनुसार दृष्यमान प्रकृति की **अमित तथा सम्पूर्ण** —

सुदंरता
अनेकता
बहुरंगता
विशालता
योजनबद्धता
उपयोगिता

आदि हमेशा मनुष्य की सुरति या दिमाग को **प्रभावित करके**, इसके अदृष्ट रचयिता सिरजनहार **प्रभु की ओर, आकर्षित करने का कारण बनती रही है ।**

कवियों, चित्रकारों तथा अन्य अनेक कलाकारों के लिए, **प्रकृति** अथवा **'स्थूल शबद'** हमेशा एक अनन्त प्रेरणा का साधन बना रहा है।

परन्तु, यहां एक नुक्ता यह है कि **'तत्त शबद'** के सूक्ष्म तथा स्थूल स्वरूप को कोई विरला संत, भक्त या **बरव्शा हुआ गुरमुरव ही अनुभव द्वारा** बूझने, अनुभव करने तथा प्रकट करने का सामर्थ्य ररवता है।

इस सूक्ष्म विचार को समझने के लिए निम्नलिरिवत उदाहरण सहायक होगा।

सूर्य से **किरणें** निकलती हैं तथा इन **किरणों में सूर्य के सभी गुण मौजूद होते हैं।** इस 'धूप' या **किरणों** के दो मुरव्य स्वरूप हैं —

१. **अदृश्य सूक्ष्म स्वरूप** —

जिसमें सात (seven) रंग तथा जीवन-रौं है।

२. **स्थूल स्वरूप** — पाँच ज्ञान इन्द्रियों द्वारा अनुभव होने वाला स्वरूप जैसे — गर्मी, प्रकाश इत्यादि।

'सूक्ष्म स्वरूप' को हमारी यह आँरवें नहीं देरव सकती क्योंकि यह सभी रंग तथा जीवन-रौं किरणों में अदृष्ट रूप में छुपे हुए हैं। इस स्वरूप को प्रकट करने के लिए सही **'युक्ति'** तथा **'प्रिज़्म'** (prism) (एक प्रकार का तिकोना शीशा), जिसमें सूर्य की किरणें कई रंगों में बदल जाती हैं, की आवश्यकता होती है। तभी तो जब सूर्य की किरणें प्रिज़्म (prism) से होकर गुज़रती हैं, तो **सात-रंग** प्रत्यक्ष हो जाते हैं। इन सत-रंगी किरणों में प्रकाश, गर्मी तथा जीवन रौं भी मौजूद होती है।

जैसे हम सूर्य की अदृश्य तथा सूक्ष्म किरणों से निकले अनेक रंगो को —

लाल – रोशनी
पीली – रोशनी
हरी – रोशनी
नीली – रोशनी
जामुनी – रोशनी
संतरी – रोशनी
बैंगनी – रोशनी

आदि, **के नाम देते हैं।**

ठीक इसी प्रकार **अदृष्ट तथा सूक्ष्म 'तत्त-शबद'** से उत्पन्न अनेक प्रकट **तथा प्रवृत 'गुणो' को गुरबाणी में** —

‘साहिब’ – शबद
‘गुर’ – शबद
‘व्यापक’ – शबद
‘दाता’ – शबद
‘भतार’ – शबद
‘सच’ – शबद
‘अपार’ – शबद
‘एक’ – शबद
‘अलरव’ – शबद
‘पूरा’ – शबद
‘बोहिथ’ – शबद
‘रवेवट’ – शबद
‘अंकश’ – शबद
‘अनहद’ – शबद
‘निर्मल’ – शबद
‘नीसाण – शबद
‘लंगर’ – शबद
‘मीठा’ – शबद
‘शीतल’ – शबद
‘महारस’ – शबद
‘रत्न’ – शबद
अउरवद’ – शबद
‘अमृत’ – शबद
‘नाम’ – शबद

आदि, **नामों से दर्शाया गया है ।**

‘शबद’ के यह अनेक गुप्त आत्मिक गुण या पक्ष भी, किसी **‘जीवन-रूपी प्रिज़्म’** (prism) अथवा **बरव्शे हुऐ महापुरुष के प्रकाशमयी आत्मिक-जीवन द्वारा प्रकाश्मान तथा प्रकट होते हैं ।**

इस नुक्ते को और अधिक स्पष्ट करने के लिए, एक उदाहरण दिया जाता है —

बिजली का करंट (Electric current) **हमारे घरों, शहरों, कारखानों आदि** में गुप्त रूप से प्रवृत हो रहा है । **‘करंट’ के अस्तित्व** का तब पता चलता है जब किसी बल्ब (bulb) के माध्यम से इसका **प्रकटाव** हो । दूसरे शब्दों में ‘बिजली के करंट’ को प्रकाशित या प्रकट करने के लिए **विशेष साधन** होते हैं,

जिनके द्वारा 'करंट' प्रकाशित तथा प्रवृत हो कर, हमारे कार्य संवारता है।

ठीक इसी प्रकार **'तत्त-शबद', 'जीवन-रौं' या 'नाम' गुप्त रूप से 'सरब-रहिआ-भरपूर'** (सर्वत्र परिपूर्ण) है। परन्तु, किसी बख्शे हुए गुरमुख प्यारे महापुरुष के **'व्यक्तित्व'** (Personality) द्वारा प्रकाशमान होता है तथा आत्मिक जलवे का करिश्मा नज़र आता है।

जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ (पृ. १२)

तूं सभना माहि समाइआ ॥

तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥

नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥

(पृ. ७२)

पीछे बताया जा चुका है कि 'सूर्य' के समस्त सूक्ष्म तथा स्थूल गुण, सूर्य की किरणों में विद्यमान तथा रवि रहे परिपूर्ण हैं। आमतौर से, साधारण मनुष्य तो केवल इन किरणों की गर्मी तथा प्रकाश के गुणों को ही जानता तथा अनुभव करता है। परन्तु इन दोनों गुणों के साथ-साथ, किरणों में विद्यमान **गुप्त रंग तथा 'जीवन-रौं' के** —

असीम

सहजस्वभाविक

निष्पक्ष

बिनमांगे

इकसार

मुफ्त

सदैवीय

'उपहारों' को कोई **विरला इनसान** ही जानता तथा अनुभव करता है।

दूसरे शब्दों में — **'स्थूल प्रकृति'** को सम्पूर्ण रूप से अनुभव करने के लिए भी, **सूक्ष्म 'तत्त-शबद' के अनुभव की आवश्यकता है**।

सांसारिक पक्ष से विचार करें तो ज्यों-ज्यों हमें किसी वस्तु, मनुष्य, स्थान, शक्ति आदि की प्रशंसा या महिमा का पता चलता है, त्यों-त्यों हमारे मन में, सहजस्वभाविक ही उसके विषय में **दिलचस्पी तथा आकर्षण** बढ़ता जाता है तथा उसे प्राप्त करने या मिलने का **चाव पैदा होता है**।

ठीक इसी प्रकार ज्यों-ज्यों **'तत्त-शबद' की महिमा हृदय में बसेगी** त्यों-त्यों इस **'तत्त-शबद' की प्राप्ति के लिए** —

आकर्षण
चाव
उत्सुकता
रीझ
उद्यम

लगातार बढ़ता जाएगा ।

सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥ (पृ४०६)

सुणि सुणि उपजिओ मन महि चाउ ॥
आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ (पृ ८९२)

इस विषय को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण दिया जाता है —

यदि कोई स्त्री किसी झगड़े के कारण क्रोध में जल-भुन रही हो, उसी समय उसके प्यारे परदेसी बच्चे का पत्र आ जाए, तो उसके क्रोध की आग्नि तुरन्त बुझ जाती है तथा उसके हृदय में **'मां-प्यार'** जागृत हो जाता है। वह उस चिट्ठी को बार बार पढ़ती या सुनती है तथा बच्चे के 'मोह' से उसका मन 'पिघल' कर उसका हृदय **'द्रवित' हो उठता है ।**

इस प्रकार उसके हृदय में **जलते हुए क्रोध की ज्वाला 'मां-प्यार' में बदल जाती है तथा 'ममता'** की उच्च उमंगे उछल पड़ती हैं। वह अपने प्यारे बच्चे का गुणगान करती हुई थकती नहीं तथा ज्यों-ज्यों वह अपने प्यारे बच्चे के गुण गाती है — त्यों-त्यों उसका हृदय द्रवित हो कर उछलता है और वह उस बच्चे के वैराग्य में व्याकुल हो जाती है।

उपरोक्त उदाहरण से सिद्ध होता है कि **माया-रूपी 'कुसंगत' अथवा द्वैत-भाव** के प्रभाव से, मन जलता-भुनता रहता है। इस **'आतस-दुनीआ'** से बचने का एक मात्र पक्का साधन है —

'खुनक नाम खुदाइआ'

अथवा 'साध संगत' में विचरण करते हुए, हरि के गुण गायन करने, व परमेश्वर की सिफ्त-सलाह करनी है, जिससे अकाल पुरुष के दैवीय गुणों से हमारा मन स्पर्श करता है ।

इस प्रकार इलाही **'पारस छूह'** से हमारे मन पर दैवीय **'पारस-कला'** घटती है। गुण गायन करते-करते हमारे उनमन में अकाल पुरुष के समस्त गुण धँस-बस कर समा जाते हैं तथा जीव भाग्यशाली हो जाता है। 'जीव' — **'मनमुख' से 'गुरमुख'** बन जाता है।

गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ (पृ. ११०)

जैसा सेवै तैसो होइ ॥ (पृ २२३)

परन्तु यहाँ समझने योग्य वास्तविकता यह है, कि सांसारिक स्थूल वस्तुऐं हमारे मन, चित्त, बुद्धि की कल्पना में शीघ्र आ जाती हैं तथा इनकी महिमा तथा तारीफ भी शीघ्र ही हमें समझ आ जाती है तथा हम आनंद भी लेते हैं। परन्तु **'तत्त-शबद'** तथा इसकी आश्चर्यजनक महिमा, **अति सूक्ष्म होने के कारण** हमारी मोटी पदार्थिक मायिकी बुद्धि, इसे **पकड़ नहीं सकती** या इसे अनुभव नहीं कर सकती तथा इसकी कद्र-कीमत जानकर इसका रंग-रस भी नहीं अनुभव कर सकती।

इसीलिए देखने में आता है, कि धार्मिक श्रेणी के बहुत से **'साधक'** शुरू-शुरू में **'शबद' की दिमागी महिमा** सुनकर परमार्थ की ओर मानसिक रूप से आकर्षित होते हैं, परन्तु 'तत्त-शबद' का अनुभवी ज्ञान न **होने के कारण** उनके भीतर **'आत्मिक आकर्षण' नहीं उत्पन्न होता** ।

इस प्रकार सारा जीवन मायिकी 'अधोगति' या 'पतन' में ही व्यतीत हो जाता है तथा इलाही जीवन-रौं की लगातार 'रवानगी' से वंचित हो कर, मायिकी मंडल में गलतान हुआ रहता है।

'तत्त-शबद' की अनुभवी महिमा का रस अनुभव करने के लिए 'साध-संगत' अथवा गुरमुख प्यारों, **बख्शे हुए महापुरषों की संगत अनिवार्य है** ।

सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ (पृ. ५९०)

संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥ (पृ. ७५६)

गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ ॥ (पृ. ९४६)

साध संगति गुर सबदु कमाई। (वा.भा.गु. १६/१)

'गुरू-रूप' 'तत्त-शबद' की महिमा हृदय में बसाने के लिए ही सतिगुरू ने हमें विस्मादी तथा गुण-भरपूर **'वाहिगुरू'** गुरुमंत्र प्रदान किया है जिसे भावना सहित जपने का ताकीद भरा हुकुम है।

गुरमत अनुसार 'तत्त-शबद' के सूक्ष्म तथा स्थूल स्वरूप को बूझने तथा अनुभव

करने के लिए, हमारी **'सुरति'** ही एकमात्र साधन है। अति सूक्ष्म तत्त -शबद को उसी स्तर की सूक्ष्मता वाली सुरति ही, पकड़ कर अनुभव कर सकती है।

तभी तो, **'शबद -सुरति' का 'मिलाप'** ही प्रभु को मिलने का एकमात्र साधन है तथा इस सूक्ष्म मार्ग को गहराई से अनुभव करना अति आवश्यक है।

शबद सुरति परमारथ परम पद शबद सुरति सुख सहज निवास है।
(वा.भा.गु ६२)

निरंकार चार परमारथ परम पद **शबद सुरति अवगाहन अभिआस है।**
(वा.भा.गु १२५)

'सुरति' की सूक्ष्मता तथा सामर्थ्य को समझने के लिए नीचे कुछ विचार प्रस्तुत हैं —

हमारे मन, चित्त, बुद्धि में किसी भी बाहरी विचार, ख्याल, भाव, दृश्य के प्रवेश करने का माध्यम या रास्ता मुख्य रूप से केवल हमारी **आँखे** तथा **कान** हैं। परन्तु देखे हुए दृश्य तथा पढ़े या सुने हुए विचार, तभी हमारे अन्तःकरण में कोई भावना उत्पन्न कर सकते हैं, **यदि हमारी भीतरी 'सुरति' या 'ध्यान' इन्हें पकड़े।** इस लिए **बिना ध्यान या सुरति के, देखे हुए दृश्य तथा पढ़े -सुने विचार, हमारे अन्तःकरण में कोई प्रभाव नहीं डालते।**

दूसरी ओर, हमारे गहन अन्त -करण में, पहले ही पिछले संस्कार तथा संगत अनुसार कुछ विचार, उंमगे, दृश्य, आदि जमा हैं। रुचि के अनुसार हमारी सुरति स्वयं ही यह पिछले दृश्य, ख्याल तथा उमंगें, बार -बार देखती तथा सोचती रहती है।

दूसरे शब्दों में हमारी सुरति वर्तमान तथा अन्तःकरण में पहले से जमा किये हुए ख्यालों, भावनाओं, घटनाओं के दृश्यों में ही **प्रवृत रहती है।**

यहाँ ध्यान देने योग्य एक अन्य नुक्ता यह है, कि अन्तःकरण की रुचि अथवा **'रंगत'** अनुसार ही, हमारी सुरति भीतरी या बाहरी —

ख्यालों
भावनाओं
घटनाओं
दृश्यों

आदि को पकड़ती है परन्तु भीतर अंकित हुई रुचि या **अन्तःकरण की 'रंगत' से भिन्न या उल्ट** — ख्यालों, भावनाओं, घटनाओं के दृश्यों को **सुरति से पकड़ने के लिये कठिन साधना की आवश्यकता होती है।**

यहाँ यह भी बताना योग्य होगा, कि हम कान और आँखे सारा दिन बंद भी नहीं कर सकते। घूमते-फिरते या काम करते, अच्छे बुरे दृश्य, आवाज़, विचार आदि सहज स्वभाविक ही हमारे मन में आते हैं तथा हमारे मन को 'फुटबाल' की भांति नचाते, भटकाते तथा दुखी करते हैं। इन तुच्छ, घातक तथा भड़काऊ तत्त्वों पर तो केवल, उच्य, पवित्र 'साध-संगत' या दैवीय वातावरण ही प्रभाव डाल सकता है या बदल सकता है। **सुरति रूप** कम्पूयटर (computer) में अंकित किये हुए ख्यालों, उमंगों, संस्कारों को **साध संगत के दैवीय तथा दामनिक रंगत के प्रभाव द्वारा ही बदला जा सकता है।**

बाकी ज्ञान इन्द्रियों की अपेक्षा, आँख और कान की ग्रहण शक्ति बहुत तीव्र होती है। बहुत दूर का दृश्य या आवाज़ एकदम हमारे मन में कोई न कोई अच्छी **या बुरी भावना** छोड़ जाता है।

उपरोक्त विचार से स्पष्ट है, कि **परमार्थक साधना के लिए** —

ध्यान
सुरति
विचार
ख्याल
दृश्य
उमंगे
वातावरण
संगति

अत्यन्त महत्व रखते हैं।

वीडीओ कैसेट (Video-Cassette) में अनेक दृश्य तथा आवाजें भरी जा सकती हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर प्रकट भी की जा सकती हैं। ठीक इसी प्रकार हमारी **'सुरति'** भी कई जन्मों से लेकर, अब तक अपने आप अनन्त दृश्य, उमंगे, ख्याल, घटनाऐं, चुपचाप अकित या रिकार्ड (record) करती आई है तथा आवश्यकता पड़ने पर या सहजस्वभाविक इन संस्कारों की रंगत प्रकट करती रहती है।

वास्तव में 'शबद-सुरति' के 'मिलाप' द्वारा ही जिज्ञासु अनेकों अंतरमुख, गुप्त परमार्थक सीढ़ियां चढ़कर प्रभु से मिल सकता है।

गुरबाणी तथा भाई गुरदास जी की वारों में **'शबद-सुरति-मार्ग'** के विषय में यूं मार्गदर्शन किया गया है —

सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥ (पृ. ६२)

सुरति सबदु सारवी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे ।। (पृ.८७७)

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वरवाणे ।। (पृ ९३८)

नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु सारवी ।। (पृ १२२७)

सबदु सुरति असगाह अघड़ घड़ाइआ । (वा. भा. गु. ३/४)

सबदु सुरति लिव चलणा जमु जागाती नेड़ि न आइआ । (वा. भा. गु. ५/१३)

सबदु सुरति लिव साध संगि पंच शबद इक सबद मिलाए ।

(वा. भा. गु. ६/१०)

सबदु सुरति लिव साध संगि गुर किरपा ते अंदरि आणै । (वा. भा. गु. ६/१९)

सबदु सुरति परचाइकै नित नेहु नवेला । (वा. भा. गु. १३/१४)

सबदु सुरति लिव पिरम रसु अकथ कहाणी कथी न जाए ।

(वा. भा. गु. १६/१०)

उपरोक्त विचार से स्पष्ट है, कि **'शबद' में सुरति जोड़ने से** समस्त आत्मिक बरकतें, गुरू कृपा के फलस्वरूप प्राप्त हो जाती हैं। परन्तु यह **'शबद -सुरति' की 'रवेल'** सरल नहीं क्योकि हमारा बाहरमुरव मन, मति तथा बुद्धि जन्म जन्मांतरों से माया में रवचित होने के कारण अपने आप माया की पकड़ से निकलने में असमर्थ है। इस लिए उपरोक्त प्रमाणों के अनुसार 'साध संगत' में विचरण करते हुए **'शबद -सुरति' की कठिन, 'अलूणी सिल चाटने'** वाली साधना कोई विरला जिज्ञासु ही करता है।

राग नाद सभ को सुणै सबद सुरति समझै विरलोई । (वा. भा. गु. १५/१६)

ते विरले सैंसार विचि सबद सुरति होइ मिरग मरंदे । (वा. भा. गु. २८/१७)

शबद -सुरति के मिलाप द्वारा ही हमारे अंदर आत्मिक आनन्द, प्रभु प्रेम या सुरव की प्राप्ति होती है।

सबद सुरति सुरवु ऊपजै प्रभ रातउ सुरव सारु ।। (पृ ६२)

साध संगति संसार विचि सबद सुरति लिव सहजि बिलासी ।

(वा. भा. गु. १५/२१)

सबद सुरति परचाइकै नित नेहु नवेला । (वा. भा. गु. १३/१४)

सबदि सुरति उपदेसु सचि समाणिआ । (वा .भा .गु. ३/१)

सतिगुर सबदि तरंग सदा सुहेलिआ ।

सबद सुरति परसंग गिआन संग मेलिआ । (वा .भा .गु. ३/१६)

सबद सुरति बैराग है सुख सहज अरोगी । (वा .भा .गु. १३/३)

सबदु सुरति लिव पिरम रसु अकथ कहाणी कथी न जाए ।
(वा .भा .गु. १६/१०)

हीरै हीरा बेधिआ सबद सुरति मिलि परचा होई । (वा .भा .गु. १५/१६)

'शबद' — अगम्य, अगोचर तथा **'प्रेम स्वरूप'** है । इसलिए —

प्रभु की भय भावना
विस्मादमयी सिफत सालाह (गुण -गायन)
इलाही प्रेम तथा
'शबद' का अभ्यास

ही **'सुरति का मार्ग'** है, जिसे केवल हमारी **'सुरति'** ही —

पहचान सकती है ।
पकड़ सकती है ।
अनुभव कर सकती है ।
आकर्षित हो सकती है ।
रस ले सकती है ।

माया के विकारों मे खचित हुआ **स्थूल बाहरमुख पदार्थवादी 'मन'** इन उत्तम - श्रेष्ठ भावनाओं को नहीं पकड़ सकता ।

कभी -कभी गुरू कृपा द्वारा 'साध संगत' में अंतरमुख सिमरन करते हुए या एकाग्रता और श्रद्धा से कीर्तन सुनते हुए, हमें **नाम -रस का 'हिलोरा' अनुभव होता है,** तो सुरति **'जागृत अवस्था'** में आ जाती है तथा पहले की अपेक्षा अधिक सुचेत और सावधान हो जाती है ।

प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ।। (पृ. २६२)

सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ विसमादु ।। (पृ. ८१४)

नानक से जागंन्हि जि रसना नामु उचारणे ।। (पृ. १४२५)

सबद सुरति सावधान होइ विणु गुर सबद न सुणई बोला ।
(वा. भा. गु. ४/१७)

सबद सुरति लिव सावधान गुरमुखि पंथ चले पग धारे ।
(वा. भा. गु. ३७/२७)

'निरंकार' तथा **'संसार सागर' के बीच 'शबद' ही सूक्ष्म 'पुल'** है, जिसे केवल **सुरति** ही **अनुभव द्वारा पार कर सकती है ।**

'सुरति' का एक अन्य गुण यह भी है कि यह अनुवादक या उल्थाकार (interpreter) है । 'सूक्ष्म तत्त -शबद' को अनुभव करके स्थूल दृश्यमान शब्दों में व्यारव्या कर सकती है तथा स्थूल दृश्यमान शाब्दिक 'गुरबाणी' का एकाग्रता तथा भावना सहित अंतर -आत्मा में अभ्यास कर के, 'सूक्ष्म तत्त -शब्द' की 'झलकों' को अनुभव कर सकती है ।

'सुरति' द्वारा मन को निरन्तर कोई —

मीठा
रसदायक
तरंगों वाला
स्वादिष्ट
सूक्ष्म

'भोजन' मिलना चाहिए, जिस द्वारा मन — माया तथा विकारों के **तुच्छ रसों को छोड़कर** 'शबद' को पकड़ सके ।

इह रस छाडे उह रसु आवा ।।
उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ।। (पृ ३४२)

अर्थात **'सुरति'** ही —

'शबद' के 'तत्त' को अनुभव कर सकती है ।
प्रभु के साक्षात दर्शन करती है ।
प्रभु के प्रिम प्याले का रंग अनुभव करती है ।

वास्तव में अनुभवी प्रेम द्वारा ही, 'सुरति', प्रभु से —

बातें
सदेश
लाड -प्यार
प्रेम अदाऐं
लेन -देन
वाणिज्य -व्यापार

गुप्त रूप से कर सकती है ।

जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ।। (पृ. ५९७)

यह **'शबद-सुरति'** की सूक्ष्म तथा गुप्त 'युक्ति' 'साध संगत' में **सिमरन अभ्यास कमाई द्वारा सहज स्वभाविक ही सीखी जाती है ।**

'शबद-सुरति' के मिलाप के बिना, **'तत्त-शबद'** या **'शबद गुरू'** को अनुभव करने का कोई अन्य साधन नहीं है ।

सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे । (पृ. १०३१)

सुचेत मन, मति तथा बुद्धि (conscious mind) को गुर शबद के अंतरीव विचार द्वारा तराशा जा सकता है ।

अचेत अन्तःकरण को (Sub-conscious-mind) को कीर्तन, अन्तरमुख सिमरन अथवा 'शबद-सुरति' के अभ्यास द्वारा तराशा जाता है ।

इसके अतिरिक्त सुरति, मति, मन तथा बुद्धि को तराशने के लिए, प्रभु की **भय-भावना** अति आवश्यक है ।

भै बिनु कोइ न लंघसि पारि ।।
भै भउ राखिआ भाइ सवारि ।। रहाउ ।।
भै तनि अगनि भखै भै नालि ।।
भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ।।
भै बिनु घाड़त कचु निकच ।।
अंधा सचा अंधी सट ।। (पृ. १५१)

भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ।। (पृ. ६४५)

आमतौर से जिज्ञासु, प्रभु की **'सर्व-व्यापकता' तथा 'अंतरयामिता'** को बहुत कम, नाममात्र या पूर्ण रूप से अनुभव नहीं करते तथा **प्रभु की भय-भावना में नहीं रहते ।**

इसी कारण यह **दिखावे मात्र भय-भावना शीघ्र ही उड़ जाती है** तथा जिज्ञासु फिर माया के प्रभाव में, अनजाने ही अनेकों तुच्छ रुचियों में गलतान हो जाते हैं ।

प्रभु की **सदा-हजूरी भय-भावना** का अनुभवी अहसास बख्शे हुऐ गुरू प्यारों की लगातार संगत में ही हो सकता है ।

इस लिए सुरति, मति मन तथा बुद्धि को घड़ने के लिए **'भय-भावना' वाली साध संगत रूपी 'सच्ची पाठशाला'** अनिवार्य है, क्योंकि बख्शे हुए गुरमुख प्यारे गुरू की 'भय-भावना' में रहते हैं तथा अकाल पुरुष की **'पावन हजूरी'** की चुप-प्रीत का रसपान करते हैं।

भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ (पृ. ८)

साध संगति भउ भाउ सहजु बैराग है ।
गुरमुख सहजि सुभाउ सुरति सु जागु है । (वा. भा. गु. ३/१३)

सबद सुरति लिवलाइ हुकमु कमाइआ ।
साध संगति भै भाइ निज घरि पाइआ । (वा. भा. गु. ३/२०)

साध संगति भउ भाउ करि सेवक सेवा कार कमाए । ....
सबदि सुरति लिवलीण होइ दरगह माण निमाणा पाए । (वा. भा. गु. ८/२४)

साध संगति भै भाइ अपिओ पी चखिआ । (वा. भा. गु. १४/१६)

साध संगति भै भाइ विचि भगति वछलु करि अछलु छलणा ।
(वा. भा. गु. १८/१७)

पारब्रहमु पूरन ब्रहमु सतिगुरु साध संगत विचि वसै ।
सबद सुरति अराधीऐ भाइ भगत भै सहज विगसै । (वा. भा. गु. ३९/१२)

हां जी, **'सुरति' ही 'गुरू-रूप' 'तत्त-शबद' का —**

चेला है
खोजी है
वाहन है
रसिक है

तथा **'सुरति' ही —**

विस्मादी उड़ाने भरती है
प्रेम-सागर में तैरती है
चुप-चाप बोलती है
चुप-चाप सुनती है

चुप -चाप देखती है
चुप -चाप आनन्द लेती है
चुप -चाप समझती है
चुप -चाप समझाती है
अदृष्ट है
गुप्त है

'शबद -सुरति' का मार्ग —

अंतरमुख है
गुप्त है
सूक्ष्म है
विस्मादी है
प्रेम स्वरूप है
प्रेम स्वैपना वाला है
आनन्द -मयी है
चाव वाला है ।

हां जी, **'शबदि -सुरति' के मेल द्वारा** —

'राम -बीन' बजती है ।
मधुर -मधुर अनहद धुन सुनाई देती है ।
अजपा -जाप की मद्धिम मीठी तथा खामोश
अबोल -बोली सुनाई देती है ।
चुप -प्रीत की बख्शिश होती है ।
'गुर शबदी गोबिंद गजदा' है ।
'अणमड़िआ मंदल' बजता है ।
'बिन सावन घनहर' गरजता है ।
'अमृतधारा, **झिम -झिम** बरसती है ।
'प्रिम -रस' का स्वाद अनुभव होता है ।
'गुरमुख रोम रोम हरि धिआवै' है ।
'नाम' की प्राप्ति होती है ।
'शून्य समाधि' में लीनता प्राप्त होती है ।
'चुप -चबोले प्रिम -पिआला' मिलता है ।

धनि धनि ओ राम बेनु बाजै ॥
मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥ (पृ ९८८)

आनद मूलु रामु सभु देखिआ **गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥**
(पृ १३१५)

अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥
बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ (पृ ६५७)

झिमि झिमि वरसै अम्रित धारा ॥
मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ (पृ १०२)

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ (पृ ९३८)

नानक निरमल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥ (पृ १०३८)

वाहिगुरू गुरु सबदु लै पिरम पिआला चुपि चबोला ।
(वा.भा.गु ४/१७)

(क्रमशः........)